मेन्स मास्टर

अफ़ग़ान-पाक चेतावनी

संदर्भ

• पाकिस्तान, जो आतंकवाद के अपराधी और पीड़ित दोनों की भूमिका से लंबे समय से परिचित है, ने हाई-प्रोफाइल आतंकी हमलों में वृद्धि देखी है। यह नई अस्थिरता चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) से जुड़े चीनी निवेश और कर्मियों के लिए खतरा है।

पृष्ठभूमि

• आंतरिक उग्रवाद के साथ पाकिस्तान का परेशान इतिहास कई कारकों के संयोजन से उपजा है:
  ◦ जातीय अल्पसंख्यकों का अलगाव, विशेष रूप से बलूचिस्तान और आदिवासी क्षेत्रों में।
  ◦ राज्य द्वारा प्रायोजित धार्मिक उग्रवाद और संप्रदायवाद।
  ◦ विदेश नीति के एक उपकरण के रूप में आतंकवाद का उपयोग।
  ◦ पड़ोसियों के साथ परेशान रिश्ते और परिणामस्वरूप सीमा विवाद।

पाकिस्तान में हाल ही में हुए आतंकवादी हमले

• एक सप्ताह के भीतर तीन बड़े हमलों ने देश को हिलाकर रख दिया:
  ◦ बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी ने तुर्बत नौसैनिक हवाई अड्डे (चीनी ड्रोन तैनात करने का संदेह) और ग्वादर बंदरगाह सुविधाओं (भारी चीनी निवेश) पर हमलों की जिम्मेदारी ली।
  ◦ CPEC के तहत सिंधु नदी पर दासू हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट का निर्माण कर रहे चीनी इंजीनियरों पर खैबर पख्तूनख्वा में हमला (2021 के हमले के समान)।

CPEC परियोजनाओं को क्यों निशाना बनाया जा रहा है?

• CPEC में उनकी गहरी भागीदारी के कारण चीनी हित मुख्य लक्ष्य हैं। विशेष सुरक्षा बल बनाने के प्रयासों के बावजूद, हमले एक गंभीर चिंता का विषय बने हुए हैं।
• चीन ने सार्वजनिक रूप से संयम बनाए रखा है, जबकि निजी तौर पर पाकिस्तान पर सुरक्षा खतरों को दूर करने के लिए दबाव डाला है।

पाकिस्तान का फ्रेंकस्टीन मॉन्स्टर: आतंकवादी समूह

• आतंकवाद के लिए भारत को दोषी ठहराने के बावजूद, पाकिस्तान ने अनजाने में उन नीतियों के माध्यम से अपना संकट पैदा कर लिया, जिन्होंने निम्नलिखित में योगदान दिया:
  ◦ घरेलू आतंकवादियों का विकास जो अब अपनी हिंसा को अंदर की ओर मोड़ रहे हैं।
  ◦ तालिबान शासित अफगानिस्तान अपनी सीमाओं के भीतर टीटीपी गतिविधियों को नियंत्रित करने में विफल रहा।
  ◦ ISIS-K के प्रभाव का प्रसार, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और उससे आगे के हमलों से जुड़ा हुआ है।

भारत और क्षेत्र के लिए स्पिलओवर प्रभाव

• सीपीईसी के माध्यम से चीन द्वारा सहायता प्राप्त बलूचिस्तान का शोषण, नाराजगी पैदा करता है - विशेष रूप से ग्वादर की रणनीतिक स्थिति के बारे में।
• होर्मुज जलडमरूमध्य के पास चीन की संभावित नौसैनिक उपस्थिति क्षेत्रीय और वैश्विक पर्यवेक्षकों को चिंतित करती है।
• भारत को अपनी सीमाओं को पार करने वाले संभावित रूप से बढ़ते आतंक के ज्वार के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

महत्वपूर्ण दृष्टिकोण

• आतंकवाद को "कुचलने" के लिए पाकिस्तान की मानक धमकियाँ मूल कारणों को संबोधित करने के बजाय बल का उपयोग करने की विफल रणनीति का संकेत देती हैं।
• हालाँकि पाकिस्तान की विदेश नीति और भारत के साथ व्यापार रुख में सकारात्मक बदलाव की कुछ संभावनाएँ मौजूद हैं, लेकिन पिछले पैटर्न परिणामों को अनिश्चित बनाते हैं।

संभावित समाधान

• पाकिस्तान को एक मौलिक नीति परिवर्तन की आवश्यकता है, जो निकट भविष्य में संभव नहीं है:
  ◦ अल्पसंख्यकों के साथ सुलह
  ◦ धार्मिक उग्रवाद का मुकाबला
  ◦ आतंकवादी समूहों का उपयोग करने वाली विदेश नीति की पुनः जाँच

निष्कर्ष

आक्रमणों में हालिया वृद्धि पाकिस्तान की पिछली कार्रवाइयों और अस्थिर क्षेत्र में चीन की बढ़ती भागीदारी के जोखिमों को उजागर करती है। हालांकि समाधान जटिल हैं और जल्दी से अपनाए जाने की संभावना नहीं है, लेकिन भारत के लिए सतर्कता महत्वपूर्ण है, क्योंकि अफगानिस्तान-पाकिस्तान क्षेत्र से परे आतंकवाद के फैलने की संभावना तेजी से स्पष्ट हो रही है।

क्या राज्य सरकारों को अधिक उधार लेना चाहिए?

संदर्भ

• भारत की संघीय संरचना के कारण केंद्र और राज्य सरकारों के बीच राजस्व संग्रह और व्यय दायित्वों में महत्वपूर्ण असमानता है।
  ◦ डेटा: केंद्र सरकार लगातार देश में कुल कर राजस्व का लगभग 60-65% एकत्र करती है।
• यह असंतुलन राज्यों को अपने राजस्व सृजन और आवश्यक व्यय के बीच के अंतर को पाटने के लिए उधार लेने पर विचार करने के लिए मजबूर करता है।

पृष्ठभूमि

• केंद्र सरकार की ऋण सीमा को केरल की कानूनी चुनौती राजकोषीय संघवाद के मूल को लक्षित करती है - सरकार के स्तरों के बीच शक्ति का संतुलन।
• डेटा: केरल के लिए केंद्र सरकार की उधार सीमा जीएसडीपी का 3% है, जिसके बारे में केरल का तर्क है कि यह सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों सहित अपनी व्यय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।

राज्यों को अधिक धन की आवश्यकता क्यों है

• राज्य सरकारें महत्वपूर्ण सामाजिक सेवाओं, विशेष रूप से स्वास्थ्य और शिक्षा के लिए प्राथमिक जिम्मेदारी वहन करती हैं। इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निरंतर निवेश की आवश्यकता होती है।
  ◦ डेटा: 2022-23 में, राज्य सरकारों ने सामूहिक रूप से सामाजिक सेवाओं पर केंद्र सरकार की तुलना में 8 गुना अधिक खर्च किया।
• केंद्र सरकार का खर्च अलग-अलग प्राथमिकताओं पर जोर देता है, जिसमें रक्षा, बुनियादी ढांचे और सब्सिडी जैसे क्षेत्रों पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

बदलते व्यय पैटर्न

• राज्य सरकारें, देश भर में, विकास के प्रति बढ़ी हुई प्रतिबद्धता प्रदर्शित करती हैं, जो सामाजिक क्षेत्रों को समर्पित उनके बजट के बढ़ते प्रतिशत में स्पष्ट है।
  ◦ डेटा: राज्य सरकारों का संयुक्त विकास व्यय 2004-05 में सकल घरेलू उत्पाद के 8.8% से बढ़कर 2021-22 में 12.5% हो गया।
• सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में केंद्र सरकार के विकास व्यय में इसी अवधि में कम नाटकीय परिवर्तन देखा गया है, जो सरकार के स्तरों के बीच अलग-अलग प्राथमिकताओं को उजागर करता है।

केरल का मॉडल

• सामाजिक क्षेत्र के खर्च पर केरल के ऐतिहासिक जोर ने असाधारण परिणाम दिए हैं:
  ◦ डेटा: केरल में भारत की सबसे अधिक साक्षरता दर (96.2%) और राष्ट्रीय औसत की तुलना में काफी बेहतर स्वास्थ्य संकेतक हैं।
• हालांकि, केरल अब आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा है:
  ◦ डेटा: राज्य के बजट का 16.4% हिस्सा पेंशन के लिए आवंटित किया गया है, जबकि 2022-23 में पूंजीगत व्यय के लिए केवल 10.6% आवंटित किया गया है, जो भविष्य की आर्थिक वृद्धि को प्रभावित कर सकता है।

ऋण सीमा के खिलाफ केरल का तर्क

• केरल का दावा है कि उधार लेने के प्रतिबंध राज्य की स्वायत्तता और संघवाद के सिद्धांतों के भीतर विकास चुनौतियों का समाधान करने की उसकी क्षमता को कमजोर करते हैं।
• राज्य उच्च शिक्षा निवेश और ज्ञान अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर देता है, जिसके लिए अतिरिक्त उधार क्षमता की आवश्यकता हो सकती है।

ऋण: अच्छा या बुरा?

• ऋण-पोषित सरकारी व्यय के बारे में अक्सर अतिरंजित आशंकाएँ होती हैं।
• कीनेसियन अर्थशास्त्र का मानना है कि जब रणनीतिक रूप से लक्षित सरकारी उधार लिया जाता है, तो इससे अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सकता है:
  ◦ तथ्य: बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं या सार्वजनिक सेवा विस्तार के माध्यम से नौकरियों का सृजन।
  ◦ तथ्य: धीमी वृद्धि के समय में व्यवसायों की सहायता करते हुए समग्र माँग को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

• भारत के राजकोषीय संघवाद के लिए संघ और राज्य सरकारों के बीच मौजूदा वित्तीय व्यवस्था की फिर से जाँच करना ज़रूरी है।
• केरल का मामला राजकोषीय स्वायत्तता और ज़िम्मेदारी के बीच इष्टतम संतुलन के बारे में सवाल उठाता है, जिसके लिए ऐसे समाधानों की आवश्यकता है जो पूरे भारत में दीर्घकालिक सतत विकास को प्राथमिकता दें।

कीनेसियन परिप्रेक्ष्य

• भारत की राजकोषीय संरचना, केरल मामले के उदाहरण के साथ, आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए सरकारी खर्च के इष्टतम उपयोग पर चल रही बहस को उजागर करती है।

• **कीनेसियन अर्थशास्त्र ऋण को एक संभावित उपकरण के रूप में समझने के लिए एक दृष्टिकोण प्रदान करता है:**
  ◦ आर्थिक मंदी के दौरान मांग को बढ़ावा देने और रोजगार सृजित करने के लिए रणनीतिक हस्तक्षेप के लिए उधार का उपयोग किया जा सकता है।
  ◦ केरल का सामाजिक क्षेत्र व्यय ऐसे निवेशों पर कीनेसियन फोकस के साथ संरेखित है, जिनका गुणक प्रभाव होता है, जीवन में सुधार होता है और दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

• **मुख्य विचार:**
  ◦ ऋण का उपयोग जिम्मेदारी से किया जाना चाहिए, ऐसे निवेशों को लक्षित करना चाहिए जो आय, विकास उत्पन्न करें और अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाएं।
  ◦ राज्यों को अपनी विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए राजकोषीय स्वायत्तता की आवश्यकता है, लेकिन यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उधार लेने से सतत विकास हो।
  ◦ एक स्वस्थ संघीय संरचना और समग्र आर्थिक सफलता के लिए संघ और राज्य सरकारों के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है।

हिमनद झील की बाढ़ से खतरा

ग्लेशियल झील विस्फोट बाढ़ (जीएलओएफ): एक बढ़ता खतरा

• **उत्तराखंड की कार्यवाही:** राज्य सरकार ने संभावित जीएलओएफ घटनाओं के प्रभाव को कम करने के लिए पांच संभावित खतरनाक ग्लेशियल झीलों के जोखिम का आकलन करने के लिए विशेषज्ञ टीमों का गठन किया है।
• **राष्ट्रीय चिंता:** भारत के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) ने हिमालय में 188 ग्लेशियल झीलों की पहचान की है, जिनमें दरार पड़ने की संभावना है, जिनमें से 13 उत्तराखंड में हैं।
• **जलवायु परिवर्तन कारक:** बढ़ते तापमान से ग्लेशियर पिघलते हैं, जिससे ग्लेशियल झीलों का आकार और संख्या दोनों बढ़ जाती है, जिससे जीएलओएफ का खतरा बढ़ जाता है।

जीएलओएफ क्या हैं?

• **परिभाषा:** जीएलओएफ अचानक और विनाशकारी बाढ़ है जो ग्लेशियल झीलों के टूटने से होती है - पिघले पानी के पिंड जो अस्थिर बर्फ या मलबे द्वारा रोके जाते हैं।
• **ट्रिगर:** दरारों का कारण ग्लेशियल काल्विंग (बर्फ का टूटना), भूस्खलन या हिमस्खलन जैसे कारक हो सकते हैं।
• **प्रभाव:** जीएलओएफ विनाशकारी बाढ़ के साथ निचले इलाकों को तबाह कर सकता है, बुनियादी ढांचे को नष्ट कर सकता है और जानमाल की हानि कर सकता है।

जीएलओएफ पर अधिक ध्यान क्यों दिया जा रहा है?

• **जलवायु परिवर्तन:** वैश्विक तापमान में वृद्धि के कारण ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे जीएलओएफ घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ रही है।
• **बुनियादी ढांचे के जोखिम:** संवेदनशील पर्वतीय क्षेत्रों में विकास से समुदायों, इमारतों और बुनियादी ढांचे को खतरा है।
• **वैश्विक खतरा:** दुनिया भर में लाखों लोग, विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान में, जीएलओएफ के जोखिम वाले क्षेत्रों में रहते हैं।

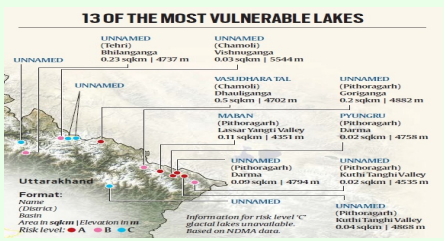

उत्तराखंड की स्थिति

• **पिछली आपदाएँ:** राज्य को 2013 (केदारनाथ) और 2021 (चमोली) में बड़ी GLOF का सामना करना पड़ा है।
• **जोखिम मूल्यांकन:** उत्तराखंड में GLOF से प्रभावित 13 झीलें हैं, जिनमें से पाँच को सबसे ज़्यादा जोखिम ('ए' श्रेणी) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
• **जलवायु पूर्वानुमान:** उत्तराखंड के तापमान में और वृद्धि होने का अनुमान है, जिससे संभावित रूप से GLOF जोखिम बढ़ सकता है।

रिंग ऑफ फायर

ताइवान भूकंप ने "रिंग ऑफ फायर" के खतरों पर प्रकाश डाला

• **तबाही:** ताइवान में एक शक्तिशाली भूकंप (7.2 - 7.4 तीव्रता) आया, जिससे काफी लोग हताहत हुए और नुकसान हुआ।
• **स्थान:** ताइवान प्रशांत महासागर के चारों ओर भूकंपीय रूप से अति सक्रिय क्षेत्र, प्रशांत "रिंग ऑफ फायर" पर स्थित है।

रिंग ऑफ फायर क्या है?

• **परिभाषा:** प्रशांत महासागर के किनारे एक विशाल, घोड़े की नाल के आकार की पट्टी, जो अक्सर भूकंप और ज्वालामुखी गतिविधि से चिह्नित होती है।
• **कारण:** कई टेक्टोनिक प्लेटों की परस्पर क्रिया और गति से निर्मित।

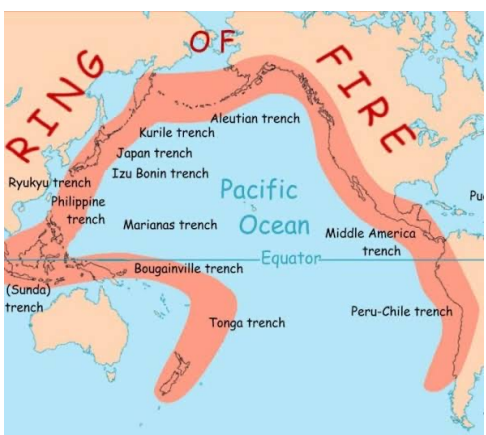

रिंग ऑफ फायर में भूकंप आने का खतरा क्यों है?

• **टेक्टोनिक घर्षण:** प्लेटों के टकराने, खिसकने या एक-दूसरे पर चढ़ने से घर्षण और दबाव पैदा होता है।
• **अटके हुए भ्रंश:** जब दबाव बनता है, तो प्लेटों के अटके हुए किनारे अचानक खुल जाते हैं, जिससे भूकंप आता है।
• **ताइवान का मामला:** फिलीपीन सी प्लेट और यूरेशियन प्लेट की परस्पर क्रिया के कारण यह भूकंप आया।

रिंग ऑफ फायर में इतने सारे ज्वालामुखी क्यों हैं?

• सबडक्शन: जब भारी टेक्टोनिक प्लेटें हल्की प्लेटों के नीचे दब जाती हैं, जिससे खाइयां बनती हैं और पृथ्वी के मेंटल के अंदर सामग्री गर्म होती है।
• मैग्मा गठन: यह गर्मी और वाष्पशील तत्व मैग्मा बनाते हैं जो सतह पर आ जाता है।
• ज्वालामुखी: जैसे ही मैग्मा सतह से फटता है, ज्वालामुखी निर्माण होता है।

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org